

सूरह — एक कहानी



सूरह अल-मुज़म्मिल

कंबल में लिपटे हुए

पूरा सफ़र — वो रात जो दिन को बनाती है —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है



सूरह नं. 73 • 20 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ्त सदस्य-ए-जारीया ईबुक

एक नज़र में सूरह

या अय्युहल्-मुज़म्मिल। कुमिल्-लैल इल्ला क़लीला

1-2. ऐ कंबल में लिपटे हुए! रात को खड़े रहो, मगर थोड़ी (छोड़ कर)।

व रत्तिलिल्-कुरआन तर्तीला

4. और कुरआन को ठहर ठहर कर पढ़ो।

इन्न नाशि-अतल्-लैलि हिय अशद्दु वत्अंव-व अक्चमु क़ीला

6. बेशक रात का उठना असर में ज़्यादा मज़बूत और बात में ज़्यादा दुरुस्त है।

वस्बिर 'अला मा यकूलून वहजुहुम हज़न जमीला

10. और जो वो कहते हैं उस पर सब्र करो, और उन्हें ख़ूबसूरती से छोड़ दो।

फ़क्र-ऊ मा तयस्सर मिनल्-कुरआन

20. तो कुरआन में से जो आसान हो पढ़ो।

वस्तफ़िऊल्-लाह। इन्नल्-लाह राफ़ूऊर्-रहीम

20. और अल्लाह से मराफ़िरत माँगो। बेशक अल्लाह बख़्शने वाले, रहीम हैं।

एक चादर में लिपटे हुए

बेटा, यह सूरह पूरे कुरआन के सबसे शफ़ीक़ अंदाज़-ए-ख़िताब में से एक से शुरू होती है।

वही शुरू होने के बिल्कुल इब्तिदाई दिनों में, जो चीज़ शुरू हुई थी उसका वज़न बे-इंतिहा था। नबी ﷺ कभी कभी अपनी चादर में लिपट जाते, फ़रिश्ते से मुलाक़ात के भारी तज़रबे के बाद गर्मी और क़रार ढूँढते। और उसी हालत में — लिपटे हुए, आराम करते हुए — आसमान ने आपको पुकारा: 'या अय्युहल्-मुज़म्मिल — ऐ कंबल में लिपटे हुए!'

बेटा, उस नरमी को महसूस कीजिए: अल्लाह ने आपको किसी मर्तबे या लक़ब से मुख़ातिब नहीं किया। उन्होंने आपको उस लम्हे की आपकी हालत से पुकारा, जैसे एक माँ कहे 'ऐ कंबल के नीचे वाले'। इसमें मोहब्बत है।

मगर जो अल्फ़ाज़ इसके बाद आए वो 'अच्छी तरह आराम करो' नहीं थे। वो थे: 'कुमिल्-लैल इल्ला क़लीला — रात को खड़े रहो, मगर थोड़ी (छोड़ कर)।'

बेटा, यही हर संजीदा बुलावे का अंदाज़ है: आराम में ख़लल पड़ता है, और एक मिशन शुरू होता है। कंबल उतर जाता है। और तारीख़ के सबसे अज़ीम शख़्स को पहला फ़र्ज़ क्या दिया गया? कोई ख़ुत्बा नहीं। कोई जंग नहीं। पैरोकारों की तंज़ीम नहीं। **अपने रब के सामने रात को खड़ा होना।**

तर्बियत का निज़ामुल-औक़ात

हिदायत हैरत-अंगेज़ तौर पर मुख़्तस है: 'रात को खड़े रहो, मगर थोड़ी (छोड़ कर) — निस्फ़हू अविन्-कुस मिन्हु क़लीला — आधी रात, या उस में से थोड़ा कम कर दो — औ ज़िद 'अलैहि — या उस पर बढ़ा दो — व रत्तिलिल्-कुरआन तर्तीला — और कुरआन को ठहर ठहर कर, तर्तील के साथ पढ़ो।'

बेटा, दो चीज़ें ग़ौर कीजिए। पहला, वो लचक: आधी रात, या थोड़ा कम, या ज़्यादा — अल्लाह अपने महबूब को एक दायरा देते हैं, कोई सख़्त घड़ी नहीं। दूसरा, इस बात पर ज़ोर कि कैसे पढ़ा जाए: तर्तील। रफ़्तार नहीं, तादाद नहीं — ठहर ठहर कर, साफ़, हर्फ़ दर हर्फ़, दिल जुबान के साथ साथ चलता हुआ।

हमारी माँ आइशा (रज़ि०) और दूसरों ने आपकी तिलावत का बयान किया: आप आहिस्ता, अलग अलग कर के पढ़ते, कि एक सूरह लोगों की तवक्क़ो से ज़्यादा वक़्त ले लेती। इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने कहा कि एक सूरह तर्तील से पढ़ना उन्हें पूरा कुरआन जल्दी जल्दी पढ़ने से ज़्यादा महबूब है। बेटा, ये हमारे दौर के लिए एक तसहीह है: मक़सद कुरआन को ख़त्म करना नहीं — मक़सद ये है कि **कुरआन आप पर अपना काम ख़त्म करे।**

और फिर अल्लाह बताते हैं कि ये रात वाली तर्बियत क्यों मुक़रर की गई: 'इन्ना सनुल्कि 'अलैक क़ौलन सक्कीला — बेशक हम आप पर एक भारी कलाम डालने वाले हैं।'

बेटा, एक भारी कलाम आने वाला था: खुद वही, जिसके वज़न से नबी ﷺ की ऊँटनी बैठ जाती और ठंडी रात में आपकी पेशानी से पसीना बहने लगता; और उसके साथ, तारीख़ का सबसे भारी मिशन। भारी मिशन ख़ाली टंकियों पर नहीं उठाए जाते। तो बोझ आने से पहले, आसमान ने आपको ईंधन के स्टेशन पर भेज दिया: **रात।**

रात ही क्यों?

और फिर अल्लाह वजह एक ऐसी आयत में बयान करते हैं जो कलाम में नफ़िसेयाती तौर पर सबसे दुरुस्त आयतों में से है: 'इन्न नाशि-अतल्-लैलि हिय अशद्दु वत्अव्-व अक्वमु क़ीला — बेशक रात का उठना असर में ज़्यादा मज़बूत और बात में ज़्यादा दुरुस्त है।'

बेटा, सोचिए रात को क्या होता है। फ़ोन बजना बंद हो जाता है। दुकानें बंद हैं। कोई देख नहीं रहा, इसलिए किसी के सामने परफ़ॉर्म करने की ज़रूरत नहीं। वो शोर जो दिन के ज़ेहन को भर देता है — बिल, मंसूबे, बहस, नोटिफ़िकेशन्स — ठहरे हुए पानी में तलछट की तरह बैठ जाता है। और उस सन्नाटे में, दो चीज़ें मुमकिन हो जाती हैं: आपकी इबादत आपके दिल पर मज़बूती से क़दम जमाती है, और आपके अल्फ़ाज़ वो सबसे सच्चे अल्फ़ाज़ बन जाते हैं जो आपकी जुबान कभी कहती है।

वो दुआ जो आप रात के तीन बजे करते हैं, बेटा, जब कोई सुन नहीं रहा, आपके पूरे दिन का सबसे इमानदार जुमला होती है।

और अल्लाह तज़ाद बढ़ाते हैं: 'इन्न लक फ़िन्-नहारि सब्हन तवीला — बेशक दिन में आपके लिए लंबी मसरूफ़ियत है।' बेटा, 'सब्ह' का मतलब है तैरना — दिन एक लंबी तैराकी है, एक के बाद एक चीज़। अल्लाह आपसे दिन का काम छोड़ने को नहीं कह रहे; वो आपको बता रहे हैं कि **दिन की तैराकी को रात की लंगर-अंदाज़ी की ज़रूरत है।**

फिर दो और हिदायतें: 'वज़्कुरिस्म रब्बिक — और अपने रब का नाम याद करो — व तबत्तल इलैहि तब्तीला — और उसी की तरफ़ पूरी तरह मुतवज्जोह हो जाओ।' 'तबत्तुल', बेटा, का मतलब है कुछ वक़्त के लिए हर चीज़ से कट कर सिर्फ़ उसी के

लिए हो जाना। रहबानियत नहीं — बल्कि आपके दिन में एक ऐसी खिड़की जिसमें किसी और चीज़ के पास आपकी तबज्जोह न हो।

'रब्बुल्-मश्रिकि वल्-मश्रिबि ला इलाह इल्ला हुव फ़त्तख़िज़्हु वकीला — मशरिक़ और मशरिब का रब; उसके सिवा कोई माबूद नहीं, तो उसी को अपना कारसाज़ बना लो।'

ख़ूबसूरत किनारा-कशी

फिर मज़ाक़ उड़ाने वालों से निबटने की हिदायत आती है — और इसमें कुरआन के सबसे शाइस्ता जुमलों में से एक है: 'वस्बिर 'अला मा यकूलून — और जो वो कहते हैं उस पर सब्र करो — वह्जुहुम हज़न जमीला — और उन्हें ख़ूबसूरती से छोड़ दो।'

बेटा, 'हज़न जमीला' — एक ख़ूबसूरत जुदाई। कोई दरवाज़ा पटख़ कर नहीं। गालियों का जवाब गाली से नहीं। कोई सर-ए-आम झगड़ा या घूरने वाली सर्द जंग नहीं। इसका मतलब है: वक्रार के साथ पीछे हट जाओ, अपनी जुबान साफ़ रखो, उनके दर्जे तक मत गिरो, और उनकी हिदायत का दरवाज़ा अपने दिल में खुला रखो।

ये हमारी रोज़मर्रा ज़िंदगी के लिए कुरआन की सबसे अमली हिदायतों में से एक है — एक बद-तमीज़ रिश्तेदार के साथ, एक दुश्मन कलींग के साथ, एक दोस्त के साथ जो मज़ाक़ उड़ाने लगा है। पीछे हट जाइए, मगर ख़ूबसूरती से हटिए।

और ग़ौर कीजिए, बेटा, ये हिदायत कहाँ रखी गई: रात को खड़े होने के हुक्म के ठीक बाद। क्योंकि **सिर्फ़ वही दिल जो रात को भरा गया हो, दिन में ख़ूबसूरती से हट सकता है!** उस भराई के बग़ैर, हमारे रद्द-ए-अमल तलख़ हो जाते हैं।

और अल्लाह बोझ उन से उतार लेते हैं: 'व ज़र्नी वल्-मुक़ज़िबीन उलिन्-न'अम्ह — और मुझे और झुठलाने वालों को छोड़ दो, जो ऐश और आराम वाले हैं।' बेटा: उन्हें मेरे लिए छोड़ दो। इन अल्फ़ाज़ में हर उस शख्स के लिए कितनी राहत है जिसे नुक़सान पहुँचाया गया हो और वो जवाब न दे सकता हो।

फिर तारीख़ से ली गई एक तंबीह: 'बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजा जो तुम पर गवाह है, जैसे हमने फिरऔन की तरफ़ एक रसूल भेजा था। मगर फिरऔन ने उस

रसूल की ना-फ़रमानी की, तो हमने उसे सख़्त गिरिफ़्त में पकड़ लिया।'

आख़िर में रहमत

और अब, बेटा, इस सूरह की आख़िरी आयत — इसमें सबसे लंबी आयत, जो बाद में नाज़िल हुई, और ये इलाही रहमत का एक शाहकार है।

तक़रीबन एक साल तक, मोमिनीन ने रात को खड़े होने पर इतनी संजीदगी से अमल किया कि: 'इन्न रब्बक य'अल्मु अन्नक तकूमु अदना मिन सुलुसयिल्-लैलि व निस्फ़हू व सुलुसहू व ताइफ़तुम्-मिनल्-लज़ीन म'अक — बेशक आपका रब जानते हैं कि आप रात की तक़रीबन दो-तिहाई खड़े रहते हैं, या उसका आधा, या उसका तिहाई — और आपके साथ एक जमाअत भी।'

उनके पाँव सूझ गए। उन्होंने मशक्कत की। और अल्लाह — जो ठीक ठीक जानते हैं कि उन्होंने हर जिस्म में क्या रखा है — ने फ़रमाया: 'वल््लाहु युक्कदिरुल्-लैल वन्-नहार — और अल्लाह रात और दिन का अंदाज़ा मुक़रर करते हैं।' अलिम अल्-लन तुह्सूह — वो जानते हैं कि तुम इसे पूरी तरह गिन न सकोगे — फ़-ताब 'अलैकुम — तो उन्होंने तुम पर रहमत से रज़ू फ़रमाया। फ़क्र-ऊ मा तयस्सर मिनल्-कुरआन — तो कुरआन में से जो आसान हो पढ़ो।'

बेटा, उस शफ़क़त को महसूस कीजिए: 'फ़क्र-ऊ मा तयस्सर' — जो तुम्हारे लिए आसान हो पढ़ो। फ़र्ज़ उठा लिया गया; दरवाज़ा चौपट खुला रहा। रात की नमाज़ उस हर शख़्स का नफ़ली शरफ़ बन गई जो ज़्यादा चाहे — और आज तक, तहज्जुद उनकी पोशीदा दौलत है जो उससे मोहब्बत करते हैं।

और वो वजहें देखिए जो अल्लाह खुद इसे हल्का करने के लिए गिनवाते हैं: "अलिम अन सयकूनु मिन्कुम मर्ज़ा — वो जानते हैं कि तुम में बीमार होंगे — व आख़रून यज़िबून फ़िल्-अज़ि यब्तगून मिन फ़ज़िल्ल्लाह — और दूसरे जो ज़मीन में सफ़र करते हुए अल्लाह का फ़ज़ल तलब करते होंगे — व आख़रून युक्क़ातिलून फ़ी सबीलिल्लाह — और दूसरे जो अल्लाह की राह में लड़ते होंगे।'

बेटा, गौर कीजिए किस का ज़िक्र मुजाहिद के साथ एक ही साँस में हुआ: ****बीमार****, और वो शख्स जो ****रोज़ी कमाने**** निकला हुआ है। वो आदमी जो अपने ख़ानदान को खिलाने के लिए अपनी शिफ़्ट कर रहा है, अल्लाह ने उसे रियायतों की आयत में मैदान-ए-जंग वाले आदमी के साथ नाम-ज़द किया। हलाल काम, सही नीयत से किया गया, इस दीन में इतना बा-इज़ज़त है।

और फिर आख़िरी हिदायतें: 'तो उस में से जो आसान हो पढ़ो, और नमाज़ क़ाइम करो, और ज़कात दो, और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो। और जो भी भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे — उसे अल्लाह के पास पाओगे; वो बेहतर और अज़्र में बढ़ी है। वस्तर्फ़िरुल्लाह — और अल्लाह से मराफ़िरत माँगो; बेशक अल्लाह बख़्शाने वाले, रहीम हैं।'

बेटा, इस इख़्तिताम की ख़ूबसूरत बनावट देखिए। सूरह ने शुरूआत सबसे सख़्त चीज़ माँग कर की — रात का ज़्यादा हिस्सा नमाज़ में। वो उस चीज़ को माँग कर ख़त्म होती है जो आसान हो, और फिर ****इस्तिफ़ार**** पर बंद होती है — गोया कह रही हो: अपने सारे खड़े होने, पढ़ने और देने के बाद भी, मेरे सामने कारनामों का बिल ले कर मत खड़े होना; मराफ़िरत की दरख़्वास्त ले कर खड़े होना।

इस सूरह से क्या सीखा

1. बड़ी ज़िम्मेदारियों को रात का ईंधन चाहिए: क़ियाम का या फ़ज़्र से पहले कुरआन का एक छोटा, मुक़रर हिस्सा शुरू कीजिए और उसे कभी मत छोड़िए।
2. रफ़्तार पर तर्तील: मक़सद ये नहीं कि आप कुरआन को ख़त्म करें, बल्कि ये कि कुरआन आप पर अपना काम ख़त्म करे।
3. रात का सन्नाटा आपकी इबादत को क़दम-जमाई और आपके अल्फ़ाज़ को सबसे सची शक्ल देता है — तबतुल की एक खिड़की की हिफ़ाज़त कीजिए।
4. 'हज़न जमीला' की मशक़ कीजिए — नुक़सान से वक़ार के साथ पीछे हटिए, कभी तल्ख़ी से नहीं; बाक़ी अल्लाह पर छोड़ दीजिए।

5. सिर्फ़ वही दिल जो रात को भरा हो दिन में ख़ूबसूरती से जवाब दे सकता है — हमारे रद्द-ए-अमल की तल्ख़ी अक्सर हमारी रातों के ख़ालीपन की निशानी है।

6. अल्लाह का दीन रहीम और हकीक़त-पसंद है: उन्होंने खुद हुक्म को हल्का किया, और बीमार और कमाने वाले को मुजाहिद के साथ शरफ़ बढ़ाया।

7. हर इबादत का इख़्तिताम इस्तिफ़ार पर कीजिए — बंदा अपनी कोशिश पेश करता है, फिर उसकी कोताहियों की माफ़ी माँगता है।

या अल्लाह, हमें रात का एक हिस्सा अपने साथ अता फ़रमाइए, कुरआन को हमारे दिलों का चश्मा बना दीजिए, और हमारी इबादत के ऐबों को माफ़ फ़रमाइए। आमीन।